भाषायें और सरकारी नौकरियां

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ | सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई | अंक २७

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ३ सितम्बर, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

हिन्दी और अुर्दू

पाकिस्तान अपनी राजभाषा अुर्दूको बनायेगा, अिस हकीकत पर जरा शांति और दीर्घदृष्टिसे विचार करनेकी जरूरत है। अैसा नहीं किया गया तो अुससे भारतके अुज्ज्वल भविष्यको नुकसान हो सकता है।

अुर्दू भारतकी ही अेक भाषा है, यह तो निर्विवाद है। अुस तरह अुसे हमारे संविधानमें स्थान प्राप्त हुआ है, यह अिस बातका स्पष्ट प्रमाण है। अिसलिअे यदि हम समझें तो आज हम अैसा निर्दोष गौरव ले सकते हैं कि पाकिस्तानको भारतने अपनी अेक भाषाकी भेंट दी है। पाकिस्तान अिस बातको समझे, तो अुसे भी दिखेगा कि वह भारतके साथ, अपने अितिहासके जरिये, भाषा-जैसी दृढ़ सांस्कृतिक कड़ीसे जुड़ा हुआ है।

अिस समझमें दोनों देशोंका लाभ है। भाषा जैसे जीवंत साधनसे दो देशोंके बीचमें प्रेम और मेलकी सांकल मजबूत रह सकती है। लेकिन कठिनाअी यह है कि आज भी पुराना मनोमालिन्य और वैर दूर नहीं हुआ है। अिसलिअे यह बड़ी हकीकत अुसके नीचे दबी पड़ी है और लोगोंकी नजर नहीं आती। लेकिन अिसमें किसीका कल्याण नहीं है। अिस हकीकतसे अिन्कार करना या अुससे आंखें मूंदना अपने ही पांव पर कुल्हाड़ी मारने-जैसी बड़ी भूल करना होगा।

अुर्दू और हिन्दी जैसी दो बातें ही जहां नहीं थीं, वहां वे हो गयीं। अिस तरह भाषाके दो भाग हुअे सो तो हुअे, देशके भी दो भाग हो गये। देशके दो भाग तो खैर हुअे, भाषाके दो भाग होनेकी जरूरत नहीं है। लेकिन अिसके बावजूद अभी तो अैसा हो गया है। परंतु पाकिस्तानको अिसीमें से अपनी अेकभाषा सिद्ध करनेका अवसर प्राप्त हुआ! कहावत है कि अेक ही वस्तु किसीको कड़वी मालूम होती है और किसीको मीठी। अुत्तर भारत आज अुर्दूके खिलाफ नफरतकी भावनाका शिकार है; वहां पाकिस्तान भारतके प्रति घृणाका भाव रखते हुअे भी अुसकी ही अेक भाषाको अपनी राष्ट्रभाषा बना रहा है! अितिहासका खेल कहो या अीश्वरका — दोनों अेक ही हैं — वह खेल कैसा विचित्र होता है, अुसका यह अेक अुदाहरण है।

अिससे मिलता हुआ दूसरा अैतिहासिक अुदाहरण देना हो, तो वह है अिंग्लैंड और युनाअिटेड स्टेट्सका। दोनों देश अेक थे। अुनकी भाषा अंग्रेजी थी। वे लड़कर अलग-अलग हो गये, लेकिन अुनकी भाषा अेक रही। अलबत्ता अुसमें देश और कालके भेदसे फर्क पड़नेके कारण 'अमेरिकन अंग्रेजी'-जैसा भेद जरूर हो गया है। लेकिन अुस देशने शब्दोंके हिज्जे आदिमें फेरफार करनेका काम ज्ञानपूर्वक बंद रखा। अन्यथा वह अितिहासका दिया हुआ अेक सहज-साधन खो बैठता। आज जब दोनों देश अपना पुराना वैर-भाव भूल गये हैं, अुस समय भाषाके अिस साधनने दोनोंको हार्दिक अेकताका भाव दिया है जो कि राजकीय दृष्टिसे अुन देशोंके अलग और स्वतंत्र होते हुअे भी काम कर रहा है।

भारत भी अपनी भाषाके द्वारा यह काम कर सकता है। पाकिस्तान अुसमें भारतका साथ दे सकता है। अुसका रास्ता यह है कि हिन्दी और अुर्दूके बीच जो गहरी और चौड़ी खाअी खुदती जा रही है अुसके बदले दोनोंको लोकभाषा बननेका आदर्श स्वीकार करके अेक होनेकी कोशिश करना चाहिये यानी जिसे हम हिन्दुस्तानी कहते हैं अुसका रूप ग्रहण करना चाहिये। हमारे संविधानने अिसका अिशारा भी किया है। अिस लोकभाषाको अुर्दू लिपि जाननेवाले, जिस तरह वह रोमन लिपिमें लिखी जाती थी अुस तरह, भले अुर्दू लिपिमें लिखें और अुस कारण कुछ फर्क रहे। किन्तु अिस तरह यदि हम अपनी अेक आंतरभाषाका विकास करें, तो अुसका लाभ पाकिस्तानको भी मिलेगा। और वह देश अुसे अुर्दू लिपिमें लिखे तो भी हमारे यहां विकसित अिस लिपिके (अरबी-फारसी लिपिकी नयी भारतीय आवृत्तिके) जाननेवाले भी होंगे। अिससे दोनों देशोंके आंतरराष्ट्रीय संबंध चालू रखनेमें आसानी होगी।

अैसा हो तो हमारी सच्ची प्रजा-शक्ति कितनी समृद्ध होगी, यह बात सोचने-जैसी है। हम लोग अिस दिशामें प्रयाण करें तो कुछ खोयेंगे नहीं, बल्कि अुससे प्रेम और शांतिके सुखकी अपूर्व वृद्धि होगी, यह स्पष्ट है।

२६-८-'५५
(गुजरातीसे)

मगनभाई देसाई

राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी
[दूसरा संस्करण]
लेखक : गांधीजी; अनु० काशिनाथ त्रिवेदी
कीमत १-८-० डाकखर्च ०-६-०

सच्ची शिक्षा
लेखक : गांधीजी; अनु० रामनारायण चौधरी
कीमत २-८-० डाकखर्च १-०-०

बुनियादी शिक्षा
गांधीजी
कीमत १-८-० डाकखर्च ०-६-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-१४

www.vinoba.in

अिमारती साधनके रूपमें चूनेका महत्त्व*

चूनेका काम अेक पुराना और बुनियादी ग्रामोद्योग है। अखिल भारत खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा तैयार की गयी ग्रामोद्योगोंकी सूचीमें चूनेको प्रमुख स्थान मिलना चाहिये था। सरकार और रचनात्मक कार्यकर्ता, दोनों अभी तक अुसकी अुपेक्षा करते आये हैं, यह अेक आश्चर्यकी ही बात है।

चूनेके पत्थरकी खदानें देशके अधिकांश हिस्सोंमें मिलती हैं और अुसे खोदने, जलाने और पीसनेका काम सदियोंसे देहाती लोग ही करते आये हैं। यह अेक अैसा अुद्योग है जिसमें मशीनरीका अभी तक तो कोअी अुल्लेखनीय अुपयोग नहीं हुआ है। जिस तरहसे शक्ति-संचालित करघोंके आक्रमणसे खादी पीछे पड़ गयी, अुसी तरह यह अुद्योग भी सीमेंटकी बड़ी-बड़ी कम्पनियोंकी प्रतिस्पर्धाके बोझसे कुचला जा रहा है।

मेरा खयाल है कि चूनेकी जगह आजकल सीमेंटके प्रयोग पर जो जोर दिया जा रहा है, अुसका कारण यह नहीं है कि चूना सीमेंटसे किसी तरह घटिया है। मुझे अिमारती कामके विशेषज्ञोंसे चूनेकी अुपयोगिता पर बातचीत करनेके प्रसंग आये हैं और प्रत्येक बार मेरा यही अनुभव रहा है कि वे मंजूर करते हैं कि चूना न केवल अेक बहुत अच्छा, अुपयोगी और सुलभ देशी अिमारती मसाला है, बल्कि कअी गुणोंमें वह सीमेंटसे बेहतर भी है। लेकिन आश्चर्यकी बात है कि वे अुसके पक्षमें कुछ करनेमें अपनी लाचारी जाहिर करते हैं।

तीव्र आवश्यकता

चूनेकी मजबूती और टिकाअूपनके बारेमें किसीको बहुत प्रमाणोंकी जरूरत नहीं होनी चाहिये। पुरानी अैतिहासिक अिमारतें जो कितने ही वर्षोंसे हवा-पानी और समयकी मार खानेके बाद अभी तक खड़ी हैं और केन्द्रीय सचिवालय, राष्ट्रपतिभवन और संसद्-भवन आदि आधुनिक बड़ी-बड़ी अिमारतें — जिनमें जुड़ाअी और छपाअीका सारा काम चूनेसे ही किया गया है — अुस बातका अकाट्य प्रमाण पेश करती हैं।

हमारे गरीब ग्रामवासी स्मरणातीत कालसे कच्चे मिट्टीके मकानोंमें रहते आये हैं। सच तो यह है कि देशके कअी हिस्सोंमें हमारे लाखों-करोड़ों लोगोंका अेकमात्र आवास घास-फूसकी झोंपड़ियां ही रही हैं और अभी तक हैं। लेकिन देशकी सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियोंमें तेजीके साथ जो परिवर्तन हो रहे हैं, अुनके फलस्वरूप अब जरूर ग्रामवासियोंमें अपनी हालतको सुधारनेकी प्रेरणा अुत्पन्न हो रही है और अुन्हें महसूस हो रहा है कि अुन्हें अच्छे स्वास्थ्यप्रद और पक्के मकानोंमें रहनेका अधिकार है। हमारी सरकारने भी जनताका जीवन-स्तर आमूलाग्र बदलने और अुन्नत करनेकी अपनी कोशिशके सिलसिलेमें अपने ग्राम-पुनर्निर्माणके कार्यक्रमको तीव्र करनेकी मुहिम जारी की है। अिस प्रसंगमें देखने पर चूनेके कामका महत्त्व और भी बढ़ा हुआ मालूम होगा। चूना हमारे देशका परम्परागत अिमारती मसाला रहा है, अिस हकीकतका खयाल करें तो समझमें आ जायगा कि अुसका पूरा अुपयोग करनेसे और अुसे बढ़ावा देनेसे निर्माण-कार्यमें महत्त्वपूर्ण वृद्धि होगी।

अिससे भी ज्यादा महत्त्वकी बात यह है कि वह ग्रामवासियोंको काम-धंधा देनेका अेक बड़ा जरिया बनाया जा सकता है। अगर अुन्हें भवन-निर्माणके काममें चूनेके अुपयोगकी तालीम दी जाय और अुनका मार्गदर्शन किया जाय, तो वह गांवोंके काफी लोगोंको काम दे सकता है, जो कि अिस तरह या तो अपनी स्वल्प आयकी पूर्ति कर सकते हैं या खासकर जब अुन्हें खेती-किसानीका काम नहीं होता, अुसे नये धंधेकी तरह कर सकते हैं।

* मअी १९५५ के 'खादी-ग्रामोद्योग' से

सस्ते घर

अिस तरह भारत-जैसे कम विकसित देशमें सस्ते घर बना सकनेका अुचित अुपाय किसी नये चमत्कारपूर्ण अिमारती मसालेकी खोज करना नहीं है; अुपाय यह है कि हमारे पास पहलेसे ही जो सस्ते अिमारती मसाले पड़े हुअे हैं, अुनके महत्त्व और मूल्यको हम दुबारा समझें। जैसा कि हम अूपर बता चुके हैं, चूना अेक पुराना और सुपरीक्षित अिमारती मसाला है। वह देशके प्रायः प्रत्येक हिस्सेमें आसानीसे प्राप्त है। अैतिहासिक स्मारकों और अिस सदीकी पहली पच्चीसीमें हिन्दुस्तानमें बनायी गयी आधुनिक बड़ी अिमारतोंमें जुड़ाअी और छपाअीके लिअे चूनेका ही प्रयोग हुआ है; अिस बातको सावधानीसे सोचें और ब्रिटेनमें निर्माण-विज्ञानका शोध करनेवाली मण्डलियोंकी अभी हालकी खोजोंका अध्ययन करें, तो पता चल जायगा कि मकानोंको सुन्दर, मजबूत और सस्ते बनानेका अेक कारगर तरीका यह है कि चूनेको निर्माण-कार्यकी योजनामें अुसका अुचित स्थान दिया जाय।

अिमारती मसालेके रूपमें चूनेके कुछ अुल्लेखनीय लाभ अिस प्रकार गिनाये जा सकते हैं:

चूनेको खोदने, जलाने और अुसका गारा बनानेकी क्रिया सरल और सस्ती है जिससे कि चूना दूसरे अिमारती मसालोंसे सस्ता पड़ता है। आज जब कि देशमें सर्वतोमुखी पुनर्निर्माणका अेक बड़ा दौर चल रहा है, जिसमें मकान, कार्यालय और कारखाने बनानेकी योजनाको प्रमुख स्थान प्राप्त है, तब चूनेके कारगर अुपयोगके जरिये लागत खर्चमें भारी बचत की जा सकती है।

पुनर्निर्माण

गांवोंका पुनर्निर्माण और खासकर गांवोंके लोगोंके लिअे घरोंका निर्माण — जो कि अपनी नीचे पड़ी हुअी जनताको दूसरोंके साथ अेक ही सतह पर लानेकी तीन बड़ी शर्तोंमें से अेक है — अेक अैसी समस्या है जिस पर तत्काल ध्यान देना चाहिये। अिस समस्याको सुलझानेमें चूना महत्त्वपूर्ण मदद कर सकता है। अगर हम ग्रामवासियोंको प्रत्यक्ष कार्य द्वारा यह दिखा दें कि चूनेका कारगर और सस्ता अुपयोग किस तरह किया जा सकता है, किस तरह वे अपने खेतोंके आसपास ही स्थित चूनेकी खदानोंसे चूनेका पत्थर खोदकर निकाल सकते हैं और बढ़िया पक्के घर बना सकते हैं, तो अिससे गांवोंमें घर-निर्माणके कार्यक्रमको अच्छा अुत्तेजन मिल सकता है। यहां यह याद रखना चाहिये कि चूना असी चीज है जिसे कि गांवोंके लोग न केवल अपने स्थानके पास ही से खोद ला सकते हैं, बल्कि गांवकी ही भट्टियोंमें वैयक्तिक या सहकारी ढंगसे अुसे जला भी सकते हैं और बैलों या पाड़ों द्वारा चलायी जानेवाली गांवकी ही चक्कियोंसे पीसकर खुद ही अुसका गारा भी तैयार कर सकते हैं। अुन्हें अिसके लिअे न तो कोअी नयी कार्यविधि सीखनेकी जरूरत है, न बाहरसे कोअी मशीनरी मंगवानेकी बात है और न अुसके निर्माण और अुपयोगमें कोअी पूंजी लगानेकी ही आवश्यकता है। सच तो यह है कि वे अिस कामको बिना किसी खास तैयारीके अनायास ही कर सकते हैं।

वह गांवोंके पुनर्निर्माणके कार्यक्रमको अुत्तेजन देनेका कार्य तो करेगा ही, अुसके सिवा अगर अिस कामका और ज्यादा विस्तार और अुपयोग किया जाय, तो वह खेतिहर मजदूरोंको, खासकर जब अुन्हें खेतीका काम नहीं होता, अेक दूसरा तथा पूरक धंधा देगा जिसकी अुन्हें बहुत जरूरत है। जब कि सरकार गृह-अुद्योगों और ग्रामोद्योगोंके संजीवन, पोषण और विकासके लिअे लाखों रुपया खर्च कर रही है, क्योंकि बढ़ती हुअी और अतिरिक्त जनसंख्याको रोजगार देना जरूरी है, तब चूनेके कामका योजनाबद्ध विकास, जिसे प्रमुख ग्रामोद्योगोंमें हाथ-करघेके बाद द्वितीय स्थानमें गिना जा

www.vinoba.in

सकता है, गांवोंमें फैली हुआी बेकारी और अर्ध-बेकारीको बड़ी हद तक दूर कर सकता है। अिस अुद्योगमें अभी तक मशीनरीका विशेष अुपयोग नहीं हुआ है और अिसलिअे अुसका सारा काम हाथ-श्रमके द्वारा ही होता है, यह हकीकत बतलाती है कि अुसमें बहुसंख्यक लोगोंको काम-धंधा देनेकी कितनी गुंजाअिश और सामर्थ्य है।

राष्ट्रका लाभ

भवन-निर्माणके काममें चूनेका विस्तृत अुपयोग होने लगे, तो अुससे अेक लाभ यह भी होगा कि बहुतसी विदेशी मुद्रा, जो आज चूनेकी जगह काम आनेवाली आधुनिक वस्तुओंके आयात पर या अुन्हें यहां तैयार करनेके लिअे आवश्यक मशीनरी मंगवाने पर खर्च होती है, वह बचेगी। अिसके सिवा, सीमेंट जसी आधुनिक अिमारती वस्तुअें बांध-कामकी हमारी बड़ी बड़ी योजनाओंके लिअे बची रहेंगी, जहां अुनका ज्यादा अच्छा अुपयोग होगा। अैसा करने पर यह भी हो सकता है कि आगे चलकर देश अिन वस्तुओंका निर्यात कर सके।

अिमारती मसालेके रूपमें चूनेका अुपयोग केवल अूपर बताये गये कारणोंसे ही लाभकारी नहीं है। अपने टेकनीकल गुणोंके कारण वह गारा बनानेके काम आनेवाले अुपादानोंमें हमेशा अेक बहुत अनुकूल अुपादान रहा है, और है। आज भी अिमारती कामके अनुभवी और योग्य अिंजीनियर ओीटोंकी भट्टियोंकी बची हुआी बेकार 'सुर्खी' के साथ चूना मिलाकर तैयार किया गया गारा पसन्द करते हैं।

चूनेके अुपयोगको अुत्तेजन देनेके लिअे आवश्यक अेक प्रधान कदम यह है कि अुसका स्टैण्डर्ड तय कर दिया जाय। सरकार अिन्डियन स्टैण्डर्ड्स अिन्स्टीट्यूशनकी निर्माण-संशोधन शाखासे चूनेका स्टैण्डर्ड कायम करनेके लिअे आसानीसे कह सकती है। अिसके लिअे केन्द्रीय पी० डब्ल्यू० डी० जैसे सरकारके कुछ दूसरे विभागोंके प्रयत्नोंसे भी — जो कि अिस दिशामें प्रयोग-कार्य करते रहे हैं — लाभ अुठाया जा सकता है और अुनसे अपना कार्य और वेगपूर्वक करनेका आग्रह किया जा सकता है।

(अंग्रेजीसे)

सुरेन्द्रनाथ जौहर

हाथ-कागजका क्षेत्र

कागज आधुनिक युगकी अेक अत्यंत महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। अुसका अुपयोग दिन-दिन बढ़ता जाता है। कागजके यांत्रिक कारखाने शुरू हुअे, अुसके पहले वह हाथसे बनाया जाता था। यह हाथसे बनाया हुआ कागज खूब टिकाअू होता था और वर्षों तक बिगड़ता नहीं था। आज भी कुछ अंशमें बही-खातों और दस्तावेजोंमें हाथ-कागजका व्यवहार होता है, लेकिन यह अुद्योग बहुत कम हो गया है। अुसे अुत्तेजन दिया जाय तो कागजकी अुत्पत्ति बढ़ायी जा सकती है और अुसके द्वारा बहुत लोगोंको रोजी दी जा सकती है। अुसकी शक्यताकी मात्रा अखिल भारत खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा दूसरी पंचवार्षिक योजनाके लिअे तयार किये गये चिट्ठेसे जानी जा सकती है।

भारतमें अभी प्रति मनुष्य वर्षमें औसतन् १.१ रतल कागज खर्च होता है। अिग्लैंड और अमेरिका जैसे देशोंमें प्रति वर्ष प्रति मनुष्य १५० से २५० रतल तक कागज खर्च होता है। हमारे यहां साक्षरताका प्रमाण १८ % है। वहां तो लगभग सभी लोगोंको अपनी-अपनी भाषामें लिखना-पढ़ना आता है। अिसलिअे यह निश्चित है कि हमारे यहां साक्षरता बढ़ने पर कागजका अुपयोग भी बढ़ेगा।

कागजका खर्च प्रति मनुष्य १० रतल हो जाय तो सारे देशके लिअे लगभग १५ लाख टन कागज चाहिये। अिस लक्ष्यांक तक पहुंचनेमें हाथ-अुद्योग अच्छी मदद कर सकता है। पाठशालाओंके विद्यार्थियोंको अुसकी तालीम दी जाय तो अपनी शिक्षाके साथ-साथ हरअेक विद्यार्थी प्रति दिन १॥-२ घंटे काम करके वर्षमें औसतन् १० रतल कागज बना सकता है। अुसके सिवा, अैसे कारखानोंके जरिये भी हाथ-कागजका अुत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

भारतमें अिस समय बड़े पैमाने पर चलनेवाली अठारह कागजकी मिलें हैं। अुनमें सालमें लगभग १॥ लाख टन कागज अुत्पन्न होता है और करीब २२००० मजदूरोंको काम मिलता है। अिन मिलोंकी कुल अुत्पादन-शक्ति और अुनके मौजूदा अुत्पादनमें अधिक फर्क नहीं है। अिसलिअे अिस बातकी बहुत कम संभावना है कि वे अधिक कागज अुत्पन्न कर सकेंगी। अिसलिअे अुत्पादन बढ़ानेके लिअे हमें दूसरे अुपाय करने पड़ेंगे। नये यांत्रिक कारखाने बढ़ाये बिना ही यह काम हाथ-अुद्योगसे किया जा सकता है। और अुसे हाथ-अुद्योगसे ही हल किया जाय, तो लोगोंको रोजी देनेका सवाल भी हल होगा। अिसलिअे ग्रामोद्योग बोर्डने अिस धंधेके विकासके लिअे अपनी योजना पेश की है। अुसका सार अिस प्रकार है:

१९५३-५४ में कागजका खर्च १९०४०० टन था और योजनाकारोंके अनुमानके अनुसार १९६०-६१ में वह २२०००० टन हो जायगा। अिसलिअे बोर्डने अुसके अुत्पादनका बटवारा नीचे लिखे मुताबिक करनेकी सूचना की है।

अभी मिलोंसे १४५००० टन, आयातसे ४५००० टन और गृह-अुद्योगसे ४२७ टन कागज हमें मिलता है। अुसके बजाय १९६०-६१ में मिलें १७६००० टन पैदा करें, आयातसे ४०००० टन प्राप्त किया जाय, और गृह-अुद्योगसे ४४०० टन बनवाया जाय, अैसी सूचना की गयी है।

अिसके लिअे (१) जो कागज गृह-अुद्योग द्वारा बनाये जा सकते हैं, अुनका आयात बंद करना पड़ेगा, (२) मिलोंको स्याहीसोख कागज बनानेकी मनाही करना पड़ेगी, और (३) विदेशसे वर्षमें ४०००० टनसे ज्यादा कागज मंगवाने पर प्रतिबंध लगाना होगा।

हाथ-अुत्पादनके लिअे बोर्डने नीचे लिखे अनुसार कार्यक्रम सुझाया है:

(१) अगले पांच वर्षोंमें १०० मनुष्योंको काम दे सके, अैसी करीब ८० अुत्पादन-अिकाअियां स्थापित करना जिनसे २००० टन कागजका अुत्पादन हो सके। ये अिकाअियां या तो सहकारी समितियां होंगी या सीमित जिम्मेदारीवाली कम्पनियां होंगी।

(२) दो-चार कुटुम्बोंकी अेक और लगभग १० मनुष्योंको रोजी देनेवाली ४०० गृह-अिकाअियां स्थापित करना, जो प्रतिवर्ष ५ टनके हिसाबसे कुल २००० टन कागजका अुत्पादन करें। अिनके सिवा ४०० अिकाअियां शालाओंमें खोलनेकी सूचना की है। अुनमें प्रतिवर्ष अेक टनके हिसाबसे ४०० टन कागजका अुत्पादन होगा।

अिस तरह कुल ५२६.७५ लाख रुपयेकी कीमतका ४४०० टन हाथ-कागज बनेगा और १२००० अधिक लोगोंको रोजी मिलेगी।

अिस योजनाकी व्यवस्थाके सिलसिलेमें केन्द्रीय संस्थाके खर्चके लिअे ८.१० लाख रुपये, कागज-निर्माणकी तालीमके लिअे मददकी तरह ६.७५ लाख रुपये, मकान, साधन और यंत्र आदि प्राथमिक आवश्यकताओंके लिअे २८.९६ लाख रुपये, अिन अिकाअियोंकी

www.vinoba.in

स्थापनाके लिअे दिये जानेवाले कर्जके लिअे ३६ लाख तथा चालू पूंजीकी तरह २० लाख रुपये और यह माल बाजारमें यंत्र-कारखानोंके मालके मुकाबलेमें टिक सके अिसलिअे कीमतमें राहत देनेके लिअे ३५.६२ लाख रुपये खर्च करनेकी सूचना की गयी है।

अिस तरह कुल खर्च अनुमानतः १३५.४६ लाख रुपये होगा। यह काम अूपर बतायी हुअी रीतिसे शुरू किया जाय, तो अुसके भावी विकासके लिअे विपुल अवकाश है।

(गुजरातीसे) वि०

हरिजनसेवक

३ सितम्बर १९५५

भाषायें और सरकारी नौकरियां

मद्राससे अेक मित्रने मेरा ध्यान भारत-सरकारकी अेक विज्ञप्तिकी ओर खींचा है, जिसमें बताया गया है कि आअी० अे० अेस० कर्मचारियोंको अपने प्रारंभिक परीक्षण-कालमें १. घुड़सवारी, २. प्रादेशिक भाषा, और ३. हिन्दीकी परीक्षायें देनी होंगी। लेकिन जो विद्यार्थी प्रादेशिक भाषाकी तरह हिन्दीकी परीक्षा देंगे, अुन्हें हिन्दीकी अलग परीक्षा नहीं देनी पड़ेगी।

विज्ञप्ति आगे बतलाती है कि "अैसे प्रत्येक परीक्षार्थीको या तो अपने प्रदेशकी प्रादेशिक भाषामें या नीचे कालम (२) में अुल्लिखित प्रादेशिक भाषाओंमें से किसी अेकमें परीक्षा देना होगी।"

यह सूची अिस प्रकार है:

राज्य (१)	प्रादेशिक भाषायें (२)
आंध्र	तेलुगु या हिन्दी
आसाम	आसामी या बंगाली
बिहार	हिन्दी, बंगाली, संथाली या ओरांव
बम्बअी	मराठी, गुजराती या कन्नड़
मध्यप्रदेश	हिन्दी या मराठी
मद्रास	तामिल, तेलुगु, कन्नड़, या मलयालम
अुड़ीसा	अुड़िया, तेलुगु या बंगाली
पंजाब	हिन्दी या पंजाबी (गुरुमुखी लिपिमें)
अुत्तरप्रदेश	हिन्दी
पश्चिम बंगाल	बंगाली या हिन्दी
हैदराबाद	मराठी, तेलुगु, कन्नड़ या अुर्दू
मध्यभारत	हिन्दी
मैसूर	कन्नड़
पेप्सू	पंजाबी (गुरुमुखी लिपिमें) या हिन्दी
राजस्थान	हिन्दी
सौराष्ट्र	गुजराती या हिन्दी
त्रावणकोर-कोचीन	मलयालम या तामिल
विन्ध्यप्रदेश	हिन्दी

विज्ञप्ति अनेक सवाल पैदा करती है, जिनमें से अेकका अुल्लेख मद्रासके अुपर्युक्त पत्रलेखकने अिस प्रकार किया है:

"निम्नलिखित राज्योंको हिन्दी प्रदेश माना गया है: बिहार, मध्यप्रदेश, पंजाब, अुत्तरप्रदेश, मध्यभारत, राजस्थान और विन्ध्यप्रदेश। अिन प्रदेशोंके परीक्षार्थी अपनी भाषाकी तरह केवल हिन्दी ही लेंगे जब कि आंध्र, आसाम, बंबअी, मद्रास, अुड़ीसा, पश्चिम बंगाल, हैदराबाद, मैसूर और त्रावणकोर-कोचीनके परीक्षार्थियोंको दो भाषायें लेनी होंगी; अर्थात् — हिन्दी और प्रादेशिक भाषा। अिस तरह हिन्दी-भाषी क्षेत्रोंके परीक्षार्थियोंको लाभ है क्योंकि अुन्हें अेक ही भाषा लेनी होगी। दूसरोंकी स्थिति अुनकी तुलनामें कठिन होगी क्योंकि अुन्हें दो भाषायें लेनी होंगी। जाहिर है कि अिस तरह हिन्दी-भाषी और अहिन्दी-भाषी क्षेत्रोंके परीक्षार्थियोंके बीच न्यायका समान बंटवारा नहीं किया जा सकता।

"हिन्दी-भाषी क्षेत्रोंके परीक्षार्थियोंके लिअे हिन्दीके सिवा तामिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम — यानी द्राविड़ी भाषाओंमें से कोअी अेक भाषा अनिवार्य क्यों न की जाय? अैसा किया जाय तो दोनों समान स्थितिमें होंगे और अुसके सिवा अुत्तर और दक्षिणमें विचारोंका आदान-प्रदान होगा जिससे राष्ट्रीय अेकताको बल मिलेगा।"

अिस सूचीमें अेक बात और ध्यान देने योग्य है। हम देखते हैं कि आंध्र, पेप्सू और सौराष्ट्रके आगे प्रादेशिक भाषाओंमें हिन्दी भी गिनायी गयी है। और अुर्दू केवल हैदराबादके आगे गिनायी गयी है, यद्यपि वह कम या अधिक मात्रामें अुन सारे प्रदेशोंमें जिनके आगे प्रादेशिक भाषाकी तरह हिन्दीका अुल्लेख हुआ है, यानी अुत्तर प्रदेश, पंजाब, बिहार, राजस्थान आदिमें प्रादेशिक भाषाकी तरह व्यवहृत होती है। दी गयी सूची भावी शासनिक व्यवस्थासे संबंधित अनेक महत्त्वपूर्ण सवाल पैदा करती है, अिसलिअे यह जानना अुपयोगी होगा कि सूचीमें प्रादेशिक भाषायें किस आधार पर निर्धारित की गयी हैं।

पत्रलेखक द्वारा अुठाये हुअे प्रश्न पर विचार करते हुअे मुझे लगता है कि अुक्त परीक्षाओंके विषय १. घुड़सवारी, २. परीक्षार्थीकी अपनी भाषासे भिन्न कोअी प्रादेशिक भाषा और ३. संघकी सरकारी भाषा — हिन्दी — रखे जायं तो क्या ज्यादा अच्छा नहीं होगा? और जिस परीक्षार्थी कर्मचारीकी भाषा हिन्दी है, अुसे तीसरे विषयके अन्तर्गत अुर्दूकी परीक्षा देनेको भी कहा जाय जिससे अुसकी हिन्दी समृद्ध बनेगी और संविधानकी ३५१ वीं धारामें संघकी सरकारी भाषाकी जो व्याख्या की गयी है अुसकी कुछ आवश्यकताओंकी पूर्ति भी हो जायगी।

अिस संबंधमें मुझे 'अुत्तर' और 'दक्षिण' की भेदपूर्ण भाषाका प्रयोग अच्छा नहीं लगता। मैं तो चाहता हूं कि अिस प्रश्न पर हम अुदार और वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोणसे विचार करें। बेशक, अैसा करते हुअे हम अपने देशकी जनताकी अेकताका ध्यान रखें और अपनी सारी महान राष्ट्रीय भाषाओंके प्रति पारस्परिक प्रेम और आदरका भाव बढ़ायें।

३०–८–'५५ मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

शिक्षाकी समस्या

गांधीजी

कीमत ३–०–० डाकखर्च १–२–०

विद्यार्थियोंसे

लेखक : गांधीजी; संपा० भारतन् कुमारप्पा

कीमत २–०–० डाकखर्च ०–१२–०

शिक्षाका माध्यम

लेखक : गांधीजी; संपा० भारतन् कुमारप्पा

कीमत ०–४–० डाकखर्च ०–२–०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद–१४

www.vinoba.in

शिक्षा-जगत्‌में अनुशासनका सवाल

पटनामें विद्यार्थियों और पुलिसके बीच अैसा दारुण संघर्ष बन बैठा कि अुसके फलस्वरूप स्वातंत्र्य-पर्वके दिन ही अुनका अपना सारा शिक्षण-कार्य (स्कूल-कालेज आदि) ही नहीं, शहरका दूसरा जीवन भी लगभग नष्ट हो गया और शहरकी शांतिकी रक्षाके लिअे दमन तककी कार्रवाअी करनी पड़ी, अैसी नाजुक परिस्थिति पैदा हो गयी। गोली चली और कितने ही मारे गये या घायल हुअे। सारा काण्ड अितना अटपटा हुआ है कि सरकारने अुसके लिअे खास जांच-समिति नियुक्त की है। गत वर्ष अैसी ही दशा मध्यभारतमें पैदा हुअी थी। अुसकी जांच-समितिकी रिपोर्ट अभी प्रकाशित हुअी ही है कि यह नयी जांच करनेकी जरूरत आ पड़ी।

गोवाकी मुक्तिके लिअे चल रहे आन्दोलनके कारण अिसी अरसेमें वातावरणमें अेक प्रकारकी व्यग्रता भी आ गयी और विद्यार्थियोंमें अुसका भी क्षोभ है। बम्बअी राज्यमें यह बात ज्यादा दिखी। और बम्बअी शहरमें तो अैसी-अैसी बातें हुअीं जिन्हें देखकर शायद अुनके करनेवालोंको भी हैरत महसूस हुअी हो।

यह सब लिखनेमें मेरा मतलब यह है कि विद्यार्थियोंकी भावनाको छूनेवाले असे प्रसंगोंमें अकसर बातका बतंगड़ बन जाता है, जिसमें विद्यार्थी तो अेक तरफ रह जाते हैं और हैरान होते हैं तथा मार खाते हैं और मामला कहांका कहां जा पहुंचता है। कह सकते हैं कि फिर किसीके काबूमें बात रहती नहीं और बादमें सब पुलिसको ही संभालना पड़ता है। हमारी लोकतांत्रिक प्रजाशक्तिके शिक्षण और विकासके लिअे यह बात अच्छी नहीं है। विद्यार्थियोंके स्वाभाविक नेता अुनके शिक्षक हैं या अुन्हें होना चाहिये। आज अिन दो वर्गोंके बीचमें जो अन्तर पैदा हो गया है, वह अभी चालू है। अिसमें सुधार होना चाहिये। हमारी अनु-शासन-संबंधी धारणाअें बदलनी चाहिये।

अिसे लिखते हुअे यहां पासका अेक किस्सा याद आता है। मेरे पास कुछ समयसे नवसारी कालेजके विषयमें शिकायतें आती थीं। अेक शिकायत यह थी कि अुस कालेजमें ली जानेवाली प्रथम वर्षकी परीक्षामें बाहरसे बैठे हुअे विद्यार्थियोंके परिणाममें बड़ी काट-छांट की गयी है; यहां तक कि अुसे २०% से भी कम कर दिया गया है! और अिसके पीछे कारण यह बताया जाता है कि अिस तरह यदि परीक्षामें बाहरसे बैठनेकी बात ज्यादा चल जाय तो कालेजमें विद्यार्थियोंकी संख्याके अूपर अुसका असर अच्छा नहीं पड़ेगा, आय घट जायगी और कठिनाअियां बढ़ेंगी। अिस परिणामको टालनेके लिअे अैसा हुआ है और यह अेक परीक्षकके द्वारा कराया गया है। यह कथन विद्यार्थियोंका है। अिसके विषयमें अुन्होंने युनिवर्सिटीके वाअिस-चान्सलरको भी लिखा पर अुसका कुछ परिणाम नहीं आया। अिसलिअे विद्यार्थियोंको अपनी शिकायत प्रगट रूपमें जनताके समक्ष रखना पड़ी।

अब तो वहां और भी सवाल अुठ खड़े हुअे हैं। मैं यहां अुनमें नहीं जाना चाहता। यहां तो अितना ही कहना है कि यदि अिस प्रकरणमें नवसारीके विद्यार्थी अपने अूपर संयम रखकर काम करेंगे, तो मुझे लगता है कि अुनके सवालका शांतिपूर्ण हल निकल आयगा। कालेजके प्रिन्सिपालको स्वेच्छासे और प्रतिष्ठाके सवालको अेक ओर रखकर बाहरसे बैठे हुअे विद्यार्थियोंका परिणाम फिरसे देख लेना चाहिये और अुसमें जो शिकायतें अूपरसे ही साफ नजर आती हों, अुन्हें सुधार लेना चाहिये।

विद्यार्थियोंके प्रश्नोंके साथ जिनका संबंध है, यदि वे लोग अपना काम अुत्तरदायित्वपूर्वक नहीं करेंगे, तो अुनके शिक्षण-कार्यमें ही दोष आ घुसेगा। क्योंकि अिसके द्वारा अुन्हें समझ और शांतिसे काम लेनेकी जो तालीम मिल सकती है, या दी जा सकती है, वह संभव नहीं होगी। और कहीं अुलटी बात हुअी तो अुसके अनेक अकल्पित और दुःखद परिणाम आयंगे। भारतके शिक्षा-जगत्‌में हमें अिस ओर ध्यान देना चाहिये। यह काम कालेजों अथवा युनिवर्सिटियों पर सरकारी अंकुश रखनेसे नहीं होगा। अिन संस्थाओंको स्वतंत्र रहकर विद्यादानका काम करनेवाली बनना चाहिये। अब वे केवल परीक्षा लेने या देनका स्थान बनकर नहीं रह सकतीं।

२६-८-'५५ **मगनभाई देसाई**

(गुजरातीसे)

अुड़ीसामें विनोबा — १०

१

समग्र ग्रामदानके रूपमें अुत्कलके अिस कोरापुट जिलेमें भूदान-यज्ञकी अंतिम अवस्थाका दर्शन हो रहा है। समग्र ग्रामदानमें प्राप्त हुअे गांवोंके लिअे विनोबाजीने पांच सूत्र बताये हैं। पहला सूत्र यह है कि जमीनका मालिक भगवान रहेगा और भगवानकी तरफसे गांव जमीनका ट्रस्टी रहेगा। कानूनमें किसी व्यक्तिकी मालकियत नहीं मानी जायगी, गांवकी मानी जायगी। हर परि-वारमें कितने व्यक्ति हैं, यह देखकर साधारणतः प्रत्येक व्यक्तिके पीछे अेक अेकड़के हिसाबसे हर परिवारको काश्त करनेके लिअे जमीन दी जायगी। हर पांच या दस सालके बाद परिवारके व्यक्तियोंकी संख्या देखकर फिरसे पुनर्वितरण होगा। कुछ जमीन गांवकी सामूहिक जमीन रहेगी, जिसका अुपयोग गांवकी अुन्नतिके कामोंके लिअे तथा सरकारी लगान देनेके लिअे किया जायगा। अगर कुछ सालके प्रयोगके बाद गांववाले चाहेंगे तो वे अपनी सारी जमीन सामूहिक करेंगे। आज सिर्फ सहूलियतके लिअे अलग-अलग खेत बनेंगे, लेकिन हर कोअी अेक-दूसरेको मदद करेगा। किसीके खेतमें कोअी बड़ा काम निकला तो सारे गांववाले मिल-कर अुसका काम कर देंगे। हरअेक अपनी फसलका अेक हिस्सा गांवके लिअे हर साल देता रहेगा। किसी पर कोअी आपत्ति आयी या किसीके खेतमें कम फसल आयी, तो अुसको अुसमें से मदद दी जायगी। कोअी किसीको कर्ज नहीं देगा बल्कि मदद ही देगा, क्योंकि सारा गांव अेक परिवार बनकर रहेगा।

साथ-साथ ग्रामोद्योग खड़े किये जायेंगे और गांव स्वावलंबी बनकर पैसेकी मायासे मुक्त होनेकी कोशिश करेगा। पहला काम तो यह होगा कि गांववाले मिलकर तय करेंगे कि हमारे गांवमें बाहरका कपड़ा नहीं आयेगा। कपास बोनेसे लेकर कपड़ा बुनने तकका सारा काम गांवमें ही किया जायगा, जिससे सबको काम मिलेगा और गांवकी लक्ष्मी गांवमें ही रहेगी। फिर गांवकी जरूरतकी अन्य चीजें भी गांवमें ही बनानेका अिंतजाम किया जायगा। गांवमें कोअी खानगी दूकान नहीं रहेगी। गांवकी तरफसे अेक दूकान होगी जिसके द्वारा बाहरकी चीजें खरीदी जायंगी और गांवमें जो जरूरतसे ज्यादा चीजें पैदा होंगी अुनको बाहर बेचा जायगा।

गांवमें सब बच्चोंको समान तालीम दी जायगी। सबको शिक्षित करनेकी दृष्टिसे विनोबाजीने अेक घंटेवाले स्कूलकी योजना रखी है। गांवका जो शिक्षक होगा, वह सुबह अेक घंटा बच्चोंको तथा शामको अेक घंटा बड़ोंको पढ़ायेगा और दिनभर अपना काम करेगा। विनोबाजी कहते हैं कि भारतकी तालीममें अुद्योग तथा ब्रह्मविद्या चाहिये, जिससे कि हाथोंको काम मिलेगा और बुद्धिका ठीक विकास होगा। प्रतिदिन शामको सब गांववाले अिकट्ठा होकर गीता, रामायण आदि धर्मग्रंथोंका पठन करेंगे और गांवकी अुन्नतिके बारेमें चर्चा करेंगे।

आज शराबखोरी और बीड़ी-सिगरेट जैसे व्यसनोंके कारण गांवकी हालत बहुत खराब हो रही है। अिसलिअे अब सारे

www.vinoba.in

गांववाले मिलकर भगवानका नाम लेकर निश्चय करेंगे कि हम शराब, बीड़ी आदि छोड़ देंगे।

आज गांवोंमें जो कर्ज है अुसको छोड़ देनेके लिअे, कमसे कम ब्याज छोड़ देनेके लिअे, साहूकारोंसे प्रार्थना की जायगी। अिसके आगे अगर कर्जकी जरूरत पड़ी तो गांवकी तरफसे कर्ज लिया जायगा। सरकारसे भी कर्ज मांगा जायगा। गांवमें सब शादियां गांवकी तरफसे होंगी, घरकी तरफसे नहीं। अिसलिअे शादीके लिअे कर्ज लेनेका सवाल ही नहीं अुठेगा।

सामाजिक क्षेत्रमें जातिभेद, छुआछूत, स्त्री-पुरुष-भेद जैसे सब भेद मिटाये जायेंगे। हर मनुष्य परमेश्वरका पुत्र माना जायगा और अुस नाते अुसको समान अधिकार मिलेंगे। सब अुद्योगोंकी समान सामाजिक, नतिक तथा आध्यात्मिक प्रतिष्ठा रहेगी। गांवकी ज़मीन पर सबका हक माना जायगा और आदर्श तो यही होगा कि हर कोअी कुछ समय खेतमें काम करेगा। क्योंकि मानव-जीवनकी पूर्णता खेतीके बिना नहीं हो सकती। गांवके बुनकर, चमार, लुहार आदि सब अुद्योग करनेवाले जिस किसी घरमें जो कुछ काम होगा कर देंगे। अुसका हिसाब नहीं रखेंगे। सालके आखिरमें फसल आने पर हरअेक किसान अुसका अेक हिस्सा अिन सबके घरमें पहुंचा देगा। हमारे गांवोंमें पहले अैसा ही होता था। अिस तरह "वसुधैव कुटुम्बकम्" का आरंभ ग्राम-परिवारसे होगा।

विनोबाजी गांववालोंको समझाते हैं कि ग्रामनिर्माणका प्रमुख आधार जनशक्ति ही है। गांववालोंको अपना अुद्धार खुद करना होगा। अगर वे गांवका अेक परिवार बनायेंगे, तो अुससे अुनकी आंतरिक शक्ति बढ़ेगी, बाहरसे सरकारकी और दूसरोंकी भी मदद आसानीसे मिलेगी और सबसे बड़ी बात यह होगी कि अैसे गांवों पर परमेश्वरकी कृपा होगी। आज तो हर कोअी अपना-अपना ही सोचता है। लेकिन गांवका परिवार बनानेके बाद सारे गांवके लिअे सोचा जायगा और अुस पर अमल किया जायगा। अिन गांवोंके नवनिर्माणका काम श्रीमती मालतीदेवी चौधरीके नेतृत्वमें चलनेवाले नवजीवन मंडलको सौंपा गया है। सरकारकी मदद भी अुसी मंडलके जरिये गांवोंको दी जायगी।

समग्र ग्रामदानसे गांवोंकी भौतिक तथा नैतिक दोनों प्रकारकी अुन्नति होगी। गांवकी फसल बढ़ेगी, गोसेवाके जरिये दूध, घी बढ़ेगा, अुद्योग बढ़ेंगे और गांव समृद्ध बनेगा। लेकिन सबसे बड़ी बात तो यह होगी कि मानव-जीवनके अंतिम अुद्देश्यकी ओर सबका ध्यान जायेगा। भूमि तथा संपत्तिका स्वामी परमेश्वर है और हम सब अुसके पुत्र हैं, अिस तत्त्वको साकार रूप देनवाले ग्रामवासियोंने ममताके विसर्जनकी ओर अेक कदम बढ़ाया है। अब वे अहंताके विसर्जनकी आकांक्षासे विश्वरूप तथा समाज-रूप भगवानमें अपनेको लीन करनेकी कोशिश करेंगे। हाथमें सेवाकर्म, हृदयमें सर्वत्र हरिदर्शनकी अभिलाषा और दिमागमें ब्रह्मविद्याकी खोज करनेकी तीव्र लालसाको लिये हुअे निरंतर आगे बढ़नेका मार्ग अब खुल गया है।

२१-७-'५५

२

धानके हरेभरे खेतोंकी सुन्दरताको निहारते हुअे, झरनोंका मधुर संगीत सुनते हुअे यात्रा चल रही थी। दूरसे पहाड़की गोदमें छोटी-छोटी झोंपड़ियां दिखायी देने लगीं। कुछ क्षणोंके बाद पश्चिमी संगीतके स्वर सुनायी देने लगे। गांवके अीसाअी भाअी-बहनोंकी अेक टोली विनोबाजीके स्वागतमें प्रभु अीसाका अेक भजन गा रही थी। दस-बीस कदम चलनेके बाद दूसरी टोली मिली। गांवके हिंदू भाअी-बहन धूप, दीप, आरती और कलश लिये हुअे स्वागतके लिअे खड़े थे।

गांवका नाम "मरीचीमाल" है, यह सुनकर विनोबाजीने कहा कि भगवान सूर्यकी किरणोंके समान आपका भी यश फैले। फिर अुन्होंने अीसाअी भाअियोंसे पूछा, अीसामसीहका क्या पैगाम आप लोग समझे हैं? फौरन जवाब मिला कि अीसामसीहकी सिखावन यही थी कि प्रेमसे रहो और बांटकर खाओ। यह सुनकर विनोबाजीने कहा, "बहुत ठीक। भगवान कृष्णने भी गीतामें यही बात कही है और मुहम्मद पैगम्बरने भी प्रेमका ही संदेश दिया है।" फिर अुन्होंने गांवके नायकसे पूछा कि क्या यह गांव ग्रामदानमें मिलेगा? नायक कुछ सोचने लगे, लेकिन सारे गांववाले अुनसे कहने लगे कि अरे भाअी, कह दो कि हम सब बांटकर खायेंगे और ग्रामदान देंगे। गांववालोंके अनुरोध पर नायकने हां कह दिया। फिर सब लोगोंने आनन्दित होकर घोषणा की — "आम गारे भूमि मालिक रहिबे नाही, रहिबे नाही", "ग्रामदान सफल हेअु।"

यह सारा केवल दस मिनटमें हुआ। परंतु यह कोअी दस मिनटका काम नहीं था। विनोबाजीने अपने प्रवचनमें कहा कि दो-तीन महीनोंसे हमारे कार्यकर्ता प्रचार करते हुअे घूम रहे हैं। लेकिन यह काम अुन्हींके प्रचारसे नहीं हुआ है। हमारे कामका प्रचार तो भगवान कृष्ण, अीसामसीह और मुहम्मद पैगम्बरने किया है।

गांववालोंको अुद्योग और सहकार्यकी महिमा समझाते हुअे विनोबाजीने अुन्हें अेक शास्त्र-वचन सुनाया, "कराग्रे वसते लक्ष्मी:" — हाथकी पांच अंगुलियां अुद्योग करती हैं और मिल-जुलकर रहती हैं, अिसलिअे वहां पर लक्ष्मी रहती है।

ग्रामवासियोंको आत्मशक्तिका भान कराते हुअे विनोबाजीने आंचलाकी सभामें कहा, "मैं आपको जीवन-विद्या सिखा रहा हूं। जीवन-विद्याके मानी हैं, अपने देहकी चिंता नहीं करना, सबकी चिंता करना और रामजीका नाम लेना। आज दुनियामें बहुत दुःख और अशांति है। बड़े-बड़े राष्ट्र अेक-दूसरेके डरसे शस्त्रास्त्र बढ़ा रहे हैं। अभी अपने देशके नेता पंडित नेहरू युरोप गये थे। अुन्होंने वहांके लोगोंको समझाया कि आपस-आपसमें लड़ाअी मत कीजिये। लोग तो सब दूर भले ही होते हैं। परंतु जिनके हाथमें शासन होता है, वे दूसरी तरहसे सोचते हैं। सब देशोंके लोगोंने पंडित नेहरूकी बात प्रेमसे सुनी। अब वे वापस आये हैं तो यही चाहेंगे कि मैंने दुनियाको जो अुपदेश दिया अुसके अनुसार हमारा देश चले। हिन्दुस्तानके खून और हड्डियोंमें शांति ही है। यहांके लोग आपत्तिमें भी शांत रहते हैं। परंतु आज जो आपत्तियां हैं, दारिद्रय और विषमता है, अुनको हम मिटा देते हैं, तो हिन्दुस्तान दुनियाको शांतिकी राह बतायेगा।"

सुनाबेड़ाकी सभामें बहनोंको बहुत बड़ी तादादमें आयी हुअी देखकर विनोबाजीने खास बहनोंके लिअे ग्रामदानका विचार समझाते हुअे कहा, "भगवानने बहनों पर अेक बड़ी भारी जिम्मेदारी सौंपी है। छोटे बच्चोंका लालन-पालन बहनोंको ही करना होता है। अिसलिअे हम यह जो जमीन बांटनेका विचार समझा रहे हैं, अुसको बहनें अच्छी तरहसे समझ लें। क्योंकि अिसमें सबके बच्चोंका अच्छा पालन-पोषण होगा। भगवानने हर घरमें बच्चे दिये हैं, चाहे गरीबका घर हो या अमीरका। आज जिनके पास जमीन नहीं है या बिलकुल कम जमीन है, अुनके बच्चोंकी परवरिश कैसे होगी? तो फिर आप ही बताअिये कि सबको जमीन मिलनी चाहिये या नहीं? अिस तरहका सवाल जब हम बहनोंसे पूछते हैं, तो वे हमेशा यही जवाब देती हैं कि सबको जमीन मिलनी चाहिये। जब बच्चेको भूख लगती है तो वह मांके पास ही जाकर खाना मांगता है। अुस समय अगर मां अुसे खाना नहीं दे सकी, तो मांको अितना दुःख होता है कि दुनियामें अिससे बढ़कर कोअी दुःख नहीं होगा। अिसलिअे हमारा यह जो आंदोलन है, वह माताओंके लिअे अमृत है। हम चाहते हैं कि मातायें घरके

www.vinoba.in

पुरुषोंको समझायें कि ग्रामदान दीजिये तो सबके बच्चोंकी अच्छी तरहसे परवरिश होगी।"

ग्रामदान पर टीका करते हुअे अेक अखबारने लिखा था कि विनोबाजी आज तक तो मालकियतको अच्छी समझकर जमीन बांटते थे, लेकिन अब मालकियतको खराब समझकर अुसे मिटाना चाहते हैं। ग्रामदान होनेके बाद गांवका अेक खेत होगा और अुस पर ट्रैक्टर चलेगा। अिसका जिक्र करते हुअे विनोबाजीने सेमली-गुडाकी सभामें कहा: "लिखनेवाले समझे नहीं हैं कि हम आज तक जो काम करते आये हैं अुसमें और आजके काममें कोअी फर्क नहीं है। गांवमें कोअी भूमिहीन नहीं रहना चाहिये। यह हमारा पहला कदम है और गांवमें कोअी भूमि-मालिक नहीं रहना चाहिये, यह हमारा आखिरी कदम है। हम मालकियत मिटा रहे हैं, परंतु अलग-अलग मालकियतके आज जो लाभ होते हैं अुन्हें हम कायम रखना चाहते हैं। जो समझे हैं कि ग्रामदानके बाद सारे गांवका अेक खेत बनेगा और अुस पर ट्रैक्टर चलेगा, वे गलत समझे हुअे हैं। ग्रामदानके बाद हर परिवारको काश्त करनेके लिअे जमीन दी जायगी। जिसके घरमें पांच मनुष्य हैं, अुसको पांच अेकड़ जमीन मिलेगी और जिसके घरमें सात मनुष्य हैं अुसको सात अेकड़ जमीन दी जायगी। अिस तरह हर कोअी अपने खेतमें प्राण लगाकर काम करेगा, लेकिन जमीनका मालिक गांव ही रहेगा। सारे गांवका अेक परिवार मानकर सब लोग अेक-दूसरेकी मदद करेंगे। अिस तरह हमारी योजनामें अलग-अलग खेतोंके जो लाभ होते हैं, वे भी रहते हैं और मालकियत मिटनेके कारण मालकियतकी हानियां भी मिटती हैं।"

कोरापुट जिलेमें ग्रामदानका क्रांति-विचार तेजीसे फैल रहा है। छोटे-बड़े सब गांवोंके लोग विचार समझ रहे हैं और अुस पर अमल कर रहे हैं। अब तक अिस जिलेमें दो सौ पचीस पूरे ग्राम मिले हैं। विनोबाजीकी यात्रा पंद्रह सितम्बर तक अिसी जिलेमें चलेगी। समग्र ग्रामदानमें प्राप्त हुअे गांवोंके निर्माण-कार्यके बारेमें सोचनेके लिअे अुत्कलकी भूदान-समितिकी सुनाबेड़ामें विनोबाजीकी अुपस्थितिमें बैठक हुअी थी, जिसमें प्रांतके राजस्व मंत्री, जो अिस जिलेके हैं, अुपस्थित थे। बंटवारेके कामकी जिम्मेदारी श्रीमती रमादेवी चौधरीको सौंपी गयी है। निर्माण कार्यकर्ताओंकी तालीमके लिअे अिस जिलेमें कुटरागडा और कुजेंद्रीमें अगले महीनमें दो कार्यकर्ता प्रशिक्षण केंद्र खोले जायेंगे।

२८-७-'५५

३

विनोबाजीकी यात्रा अभी अुत्कलके कोरापुट जिलेमें ही चल रही है। लेकिन बीचमें दूसरा कोअी रास्ता न होनेके कारण अुनको तीन दिनके लिअे आंध्र होकर जाना पड़ा था। वैसे आंध्रकी यात्रा तो अक्तूबरमें शुरू होगी। लेकिन अिन तीन दिनोंकी यात्रासे आंध्रमें अुत्साहकी लहर दौड़ गयी।

आंध्रके रावीकोणा जैसे छोटेसे गांवमें विनोबाजीके स्वागतके लिअे अुपस्थित आंध्रके प्रमुख नेता तथा भूदान कार्यकर्ताओंको अहिंसाके बारेमें समझाते हुअे विनोबाजीने कहा, "जो अहिंसाकी दवा लेना चाहते हैं अुनके लिअे अेक पथ्य है। वह पथ्य यह है कि अुनकी वाणीमें मधुरता और हृदयमें प्रेम होना चाहिये। अिस काममें किसी भी प्रकारकी जबरदस्ती, दबाव, डराना या धमकाना बिलकुल नहीं होना चाहिये। अगर कहीं जरा भी कटु वाणीका प्रयोग हुआ, तो अिस औषधसे रोग दूर नहीं होगा बल्कि मृत्यु होगी। हम सर्वस्व दान मांगनेके लिअे निकले हैं। यह हेमगर्भकी मात्रा है। तो अिसके साथ मधुर अनुपान होना चाहिये।"

आंध्र प्रदेश कांग्रेस कमेटीके सभापतिने पारवतीपुरम्‌की सभामें आश्वासन दिया कि कांग्रेसके सामने यही अेक कार्यक्रम है और अिसमें वे पूरी ताकत लगायेंगे। कार्यकर्ताओंकी सभामें कअी विषयों पर चर्चा हुअी। प्रश्नोंके जवाबमें विनोबाजीने कहा, "मानवके हृदय पर श्रद्धा ही आस्तिकता है, जो भूदान-यज्ञका अधिष्ठान है। सामनेवालेका हृदय-परिवर्तन हो सकता है, अिसी विश्वाससे काम करना चाहिये। अहिंसाकी शक्ति अपार है। भूदानका काम तो अेक प्रयोग है, जिसके जरिये हमें अहिंसाकी शक्तिको विकसित करना है। हमें किसीकी भी निंदा नहीं करनी चाहिये। सबका सहयोग हासिल करना चाहिये और खुद सातत्यसे काममें लगना चाहिये। तितिक्षासंपन्न और प्रेमसे काम करनेवाले कार्यकर्ता जितने मिलेंगे अुतना यह काम आगे बढ़ेगा। यह काम किसी भी राजशक्तिसे नहीं हो सकता, यह राजशक्तिसे परे है। यह अेक स्वतंत्र धर्मचक्र-प्रवर्तनका कार्य है।"

पारवतीपुरम्‌की विराट सभामें तेलंगानाके प्रथम भूदानकी घटनाका जिक्र करते हुअे विनोबाजीने कहा, "जिस दिन मुझे पहला सौ अेकड़का दान मिला अुस रातको मैं सोचने लगा कि क्या अिस घटनाका कोअी अर्थ है? तो मेरे ध्यानमें आया कि दुनियामें मानव केवल अपने विचारसे काम नहीं करता है। विश्वमें अुसके लिअे विचारकी तैयारी होती है। आज विश्वमें हवा तैयार हुअी है। मैं तो निमित्त मात्र हूं। फिर मैंने सोचा कि क्या मुझमें यह काम अुठानेकी शक्ति है? तो अंदरसे आवाज आयी कि मैं शक्तिशून्य हूं। लेकिन यद्यपि मैं शक्तिशून्य था परंतु विश्वासशून्य नहीं था। अिसलिअे मैंने सोचा कि अगर मैं अभिमानशून्य हो जाअूं, तो जिसने रामावतारमें बंदरोंसे काम लिया, वह मुझसे भी काम लेगा। दूसरे दिन दूसरे गांवमें जाकर मैंने कहा कि अगर आपके घरमें चार लड़के हैं तो मैं पांचवां हूं, मुझे पांचवां हिस्सा दीजिये। वहांके लोग अिसके लिअे बिलकुल तैयार नहीं थे कि अैसी कोअी मांग की जायगी। लेकिन हिरोशिमामें अेटम बमका जो परिणाम हुआ, वह मेरे अुस वक्तव्यका वहां पर हुआ। मुझे पचीस अेकड़ जमीन मिल गयी और भूदान-यज्ञ आरंभ हुआ।"

सर्वोदयके बारेमें समझाते हुअे विनोबाजीने कहा, "सर्वोदयके मानी हैं सब समान, सब भाअी-भाअी, जिसमें हर कोअी कहेगा कि पहले सब सुखी बनें फिर मैं सुखी बनूंगा। सर्वोदयकी मूर्ति घरकी माता है, जो सबको खिलाकर पीछे खाती है। सर्वोदयकी तालीम विनोबा नहीं दे रहा है, बल्कि हर माता अपने बच्चोंको दे रही है। कुछ लोगोंका खयाल है कि मनुष्यमें स्वार्थकी भावना ज्यादा होती है और परमार्थकी कम। मैं अुनसे पूछना चाहता हूं कि परिवारमें कौनसा न्याय चलता है। मैं यही कह रहा हूं कि परिवारका न्याय समाज पर लागू करो और गांवका परिवार बनाओ। मेरा दावा है कि मैं समाजको सच्चे स्वार्थकी तालीम दे रहा हूं। हिन्दुस्तानमें हर मनुष्यका स्वार्थ अिसीमें है कि वह व्यक्तिगत मालकियतका विसर्जन करे।"

कोटिपामकी सभामें राज्यशास्त्रका पाठ पढ़ाते हुअे विनोबाजीने कहा, "विदेशकी सत्ता हट जानेसे देशमें स्वराज्य स्थापित हुआ है, जो केंद्रित स्वराज्य है। अब शासन विभाजनके जरिये विभाजित स्वराज्य या ग्रामराज्य स्थापित करना है। फिर अुसके बाद राज्यमुक्ति या रामराज्य स्थापित होगा।"

विनोबाजीकी यात्रा सितंबरके अंत तक कोरापुट जिलेमें चलेगी। कोरापुट क्रांतिके पथ पर अग्रसर हो रहा है। कोरापुटमें अब तक सोलह हजार सात सौ दाताओंके जरिये अेक लाख सोलह हजार अेकड़ भूमि प्राप्त हुअी है और ३६० पूरे गांव मिले हैं। कुल अुड़ीसामें अब तक पांच सौ से अधिक पूरे गांव मिले हैं।

११-८-'५५ नि० दे०

www.vinoba.in

टीका-कानूनमें सुधार करो

सम्पादक, हरिजन

२५ जून, १९५५ के 'हरिजन' में (हरिजनसेवक, २-७-'५५) अेक सम्पादकीय टिप्पणी प्रकाशित हुअी है जिसमें कहा गया है कि मद्रास सरकारने अपने प्रान्तमें जो लोग आन्तरिक विश्वासके आधार पर टीका लगाये जानेका विरोध करते हैं अुन्हें अुसे न लगानेकी छूट दे दी है।

महात्मा गांधी टीकेके खिलाफ थे और भारतमें आज अनेक लोग हैं जो अिस सवालका अध्ययन करनेके बाद कअी कारणोंसे अुसके विरोधी हो गये हैं। वे न तो खुद टीका लगवाना चाहते हैं और न अपने बच्चोंको या अपने पालितों और रक्षितोंको ही अुसे लगवाना चाहते हैं।

बछड़ोंसे टीकेकी लसी तैयार करनेकी प्रक्रियामें बछड़ेको बहुत कष्ट होता है। अुसके मवादसे तैयार की गअी अिस लसीको मनुष्यके शरीरमें प्रविष्ट करनेकी क्रिया बहुत लोगोंको घृणित मालूम होती है और स्वस्थ शरीरमें अिस जहरको डालकर शरीर पर जहरीले द्रव्यसे भरे हुअे फफोले अुठानेके खिलाफ अुनके मनमें स्वाभाविक विरोध पैदा होता है। टीकेसे मिलनेवाली सुरक्षा (अगर अुससे मिलती हो) और अिस सुरक्षाकी अवधि पर बहुत मतभेद है।

अिंग्लैंडमें अनिवार्य टीका करीब ५० वर्ष पहले बंद कर दिया गया था। और वहां आज लाखों-करोड़ों बच्चे हैं जिन्हें पिछली आधी सदीमें कभी टीका नहीं लगाया गया। आंकड़े बताते हैं कि चेचककी बीमारी अिंग्लैंडमें लगभग नाबूद हो गयी है और अुसका यह लोप सिर्फ वैयक्तिक और सामाजिक स्वच्छताका परिणाम है। कोअी कारण नहीं कि हमारा देश भी अपने यहां वैसी ही स्वच्छता और सफाअी क्यों न रखे। प्रचलित पश्चिमी चिकित्सा-पद्धतिमें अनेक अैसे सिद्धान्त और विश्वास हैं जिनका आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सा-पद्धतिके अनुसार कोअी आधार नहीं है; टीकेका प्रचलित सिद्धान्त भी अैसा ही है और अुसे कअी कारणोंसे अमान्य ठहराया जा सकता है।

विज्ञान समय समय पर अपने माने हुअे सिद्धान्तोंको छोड़ने या बदलनेके लिअे बाध्य हुआ है। टीकेका सिद्धान्त भी अैसा नहीं है जिसका खंडन न किया जा सके। अनेक प्रसिद्ध डाक्टर अुसके विरोधी रहे हैं और आज भी हैं।

अिस बातको ध्यानमें रखें तो जाहिर है कि हरअेक अैसे व्यक्तिका, जो अिस सिद्धान्तमें विश्वास नहीं करता, यह अधिकार माना जाना चाहिये कि वह अपने स्वस्थ शरीरमें अिस जहरको भरवानेसे अिनकार करना चाहे तो कर सके।

मद्रासको अिस बात पर बधाअी देना चाहिये कि अुसने मद्रास शहरके म्युनिसिपैलिटी कानूनमें अुपयुक्त सुधार करके टीकेके विरोधियोंको अुससे मुक्ति दे दी है।

क्या मैं आशा करूं कि बम्बअी सरकार और खासकर अुसके स्वास्थ्य-मंत्री श्री शान्तिलाल शाह बम्बअी राज्यमें भी अिस लोकतांत्रिक सुधारको शुरू करेंगे और टीकेके तात्त्विक विरोधियोंको अपने, अपने बच्चों और अपने रक्षितोंके स्वस्थ शरीरमें अिस जहरीली लसीके जबरदस्ती भरे जानेसे अिनकार करनेका अुचित अधिकार देंगे? मैं अुम्मीद करता हूं कि मेरे अिस निवेदन पर अुचित ध्यान दिया जायगा।

आपका

(अंग्रेजीसे) रुस्तमजी अेम० अल्पाअीवाला

मिल और चरखा

[अगस्तकी 'ग्रामोद्योग पत्रिका' में श्री जे० सी० कुमारप्पाने अम्बर चरखे पर अेक नोट लिखा है; नीचे दिया जा रहा हिस्सा आवश्यक परिवर्तनके साथ अुसी नोटसे लिया गया है।]

आजकल कअी कारणोंसे, जो मनुष्य-कृत हैं, मिलकी अुत्पादन-शक्ति अुसके चालू खर्चकी तुलनामें अधिक मालूम होती है। मिलके लिअे जरूरी मुख्य वस्तुओंमें से अेक, जिसे अुसे कृत्रिम रीतिसे कम की गयी कीमत पर दिया जाता है, अींधन है — यानी, कोयला, तेल या बिजली। ये वस्तुअें अुसे 'लागत खर्च' के आधार पर तय की गयी अैसी तथाकथित कीमत पर दी जाती हैं जो अिन पदार्थोंकी असली कीमत नहीं बताती। कोयलेका अुदाहरण लीजिये। कोयला राष्ट्रकी पुश्तैनी संपत्ति है। कोयलेकी खान पर कोयलेकी 'कीमत' अुसे खानमें से खोदकर बाहर लानेमें जितना खर्च पड़ता है, अुतनी ही मानी जाती है। फिर अुसे मिल तक पहुंचानेमें जो खर्च होता है, अुसे जोड़कर मिलके लिअे अुसकी कीमत तय की जाती है। अिस तरह, मिलोंको यह कुदरती माल बहुत सस्ते भाव पर दे दिया जाता है। अुदाहरणके लिअे, अगर वह अुसे २० रु० प्रति टनके हिसाबसे दिया जाता है, तो अिसका यह मतलब नहीं है कि अुस कोयलेका असली मूल्य २० रु० ही है। अिस कोयलेकी कीमत असलमें अुतनी चालक शक्ति पैदा करनेके लिअे जितने आदमी लगाये जा सकते थे अुनकी मजदूरीका खयाल करके तय करनी चाहिये। और मनुष्यकी मजदूरी यानी अुसकी चालक शक्तिकी कीमत अुतनी मानी जाना चाहिये जितनी अेक परिवारके समुचित भरण-पोषणके लिअे जरूरी होती है। बहसके लिअे हम मान लें कि यदि कोयलेकी कीमत अिस तरह लगायी जाय तो वह १६० रु० टन पड़ेगी। यानी दोनों कीमतोंका फर्क १४० रु० गोया मिलोंको दी गयी अप्रगट राष्ट्रीय सहायता है। अिसलिअे यदि मिल और चरखेकी तुलना ही करनी हो, तो अुनके समान अुत्पादनकी लागत कूतनेके लिअे मिलके खर्चमें यह सहायता शामिल करना जरूरी है।

आवश्यकता अिस बातकी है कि अींधन और चालक शक्तिके अुचित दाम लगाये जायें और तब मजदूरोंके लिअे समुचित जीवन-मानके आधार पर मिलोंको चलानेमें लगनेवाले खर्चका ठीक हिसाब किया जाय। और तब, जैसी कि हमें अुम्मीद है, यदि हम देखें कि मिलें हमें पुसाती नहीं हैं तो हम अुन्हें बन्द करनेका साहस-पूर्ण कदम अुठायें और हाथ-कताअीकी दरें अुचित प्रमाणमें बढ़ायें।

[यदि हम, जैसा श्री जे० सी० कुमारप्पाने यहां समझाया है अुस तरह देखें तो स्पष्ट हो जाता है कि चालक शक्तियों द्वारा चलाये जानेवाले सारे अुद्योगोंको राष्ट्र लगातार बड़ी मदद दे रहा है और हमारी अर्थ-रचना अिस बोझको ढोये जा रही है, क्योंकि तथाकथित अर्थविज्ञान गरीब लोगोंके साथ किये जा रहे अिस छल-कपटको नजर-अन्दाज करता है। क्या अर्थशास्त्री श्री कुमारप्पा द्वारा — जो अुनमें से ही अेक हैं लेकिन जो अुनकी जीर्णमतवादिताके साथ अेकराय नहीं हैं — अुठाये गये अिस प्रश्नका अुत्तर देंगे?

२०-८-'५५ —म० प्र०]

(अंग्रेजीसे)

विषय-सूची

		पृष्ठ
हिन्दी और अुर्दू	मगनभाई देसाई	२०९
अिमारती साधनके रूपमें चूनेका महत्त्व	सुरेन्द्रनाथ जौहर	२१०
हाथ-कागजका क्षेत्र	वि०	२११
भाषायें और सरकारी नौकरियां	मगनभाई देसाई	२१२
शिक्षा-जगत्में अनुशासनका सवाल	मगनभाई देसाई	२१३
अुड़ीसामें विनोबा — १०	नि० दे०	२१३
टीका-कानूनमें सुधार करो	रुस्तमजी अल्पाअीवाला	२१६
मिल और चरखा	जे० सी० कुमारप्पा	२१६

www.vinoba.in